दिनांक–10.06.2016 गया प्रमंडल के जीविका समूह की महिला सदस्यों की सभा में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के संबोधन का ट्रांस्क्रिप्शन

माननीय मंत्री ग्रामीण विकास विभाग एवं संसदीय कार्य विभाग और नवादा जिले के प्रभारी मंत्री श्री श्रवण कुमार जी, माननीय मंत्री पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग श्री अवधेश कुमार सिंह जी, माननीय मंत्री लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग एवं विधि विभाग और गया जिले के प्रभारी मंत्री श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा जी, माननीय मंत्री पर्यटन विभाग और औरंगाबाद जिले की प्रभारी मंत्री श्रीमती अनीता देवी जी, बिहार सरकार के मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह जी, पुलिस महानिदेशक श्री पी0 के0 ठाकुर जी, बिहार के विकास आयुक्त श्री शिशिर सिन्हा जी, गृह विभाग और सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव श्री आमिर सुबहानी जी, शिक्षा विभाग और स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव श्री आर0 के0 महाजन जी, ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री अरविन्द कुमार चौधरी जी, मगध प्रमंडल के आयुक्त श्री लियान कुंगा जी, मुख्यमंत्री के सचिव श्री चंचल कुमार जी, अतीश चंद्र जी, मनीष वर्मा जी, ग्रामीण विकास विभाग के अंर्तगत जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी श्री बालामुरूगन जी, पुलिस महानिरीक्षक श्री नैयर हसनैन खान जी, मगध रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री सौरव कुमार जी, गया के जिलाधिकारी कुमार रवि जी, जहानाबाद के जिलाधिकारी श्री मनोज कुमार सिंह जी, नवादा के जिलाधिकारी श्री मनोज कुमार जी, औरंगाबाद के जिलाधिकारी श्री कंवल तनुज जी, अरवल के जिलाधिकारी श्री आलोक रंजन घोष जी, गया की वरीय पुलिस अधीक्षक श्रीमति गरिमा मल्लिक जी, जहानाबाद के पुलिस अधीक्षक श्री अतिन्द्र कुमार जी, नवादा के पुलिस अधीक्षक श्री विकास वर्मन जी, औरंगाबाद के पुलिस अधीक्षक श्री बाबूराम जी, अरवल के पुलिस अधीक्षक श्री दिलीप कुमार मिश्रा जी, जीविका की राज्य परियोजना प्रबंधक श्रीमति अर्चना तिवारी जी, मंच संचालक श्री आशुतोष गौरव जी, यहॉ उपस्थित जीविका की दीदीगण, साक्षरताकर्मीगण, विशिष्ट अतिथिगण, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों। स्वयं सहायता समूह से जुड़ी दीदीयों के मगध प्रमंडल के सम्मेलन में उपस्थित होकर मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है। ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री अरविन्द कुमार चौधरी जी जीविका से प्रारंभ काल से ही जुड़े हैं, जब से जीविका के अंर्तगत स्वयं सहायता समूहों का गठन प्रारंभ हुआ था। 2007 में विश्व बैंक से कर्ज लेकर हमलोगों ने जीविका नाम के इस कार्यक्रम की शुरूआत की। छह दिनों में चौवालिस प्रखंड से इसकी शुरूआत हुई और आज पूरे बिहार में हर जिले और हर प्रखंड में इस कार्यक्रम को विस्तार किया गया है और हमलोग का यह लक्ष्य है कि 2017 तक 10 लाख स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जाये। और

मुझे खुशी है कि पॉच लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों का गठन हो चुका है। मगध प्रमंडल में जितने समूहों का गठन हुआ है, उसकी चर्चा श्री अरविन्द चौधरी जी कर रहे थे। गया में जीविका की दीदीयों के साथ पहले भी चर्चा करने का मुझको अवसर मिला है। हमने उनसे बातचीत की। कई जगहों पर उनके काम को देखा है। और मैं बहुत प्रभावित हुआ हूॅ। स्वयं सहायता समूहों का गठन देश में पहले से हो रहा था। बिहार इस मामले में पिछड़ा हुआ था। महिला विकास निगम के माध्यम से कुछ समूहों का गठन होता था। और पूर्व में गठित स्वयं सहायता समूह के दीदीयों के साथ भी मुलाकात करने उनके साथ चर्चा करने उनके काम को समझने और जानने के लिये 2006 में मैं मुजफ्फरपुर जिले में गया था। जो भी काम हो रहा था। मैंने देखा की महिलायें जब जुड़ती हैं स्वयं सहायता समूह के साथ। तो उनमें आत्मविश्वास का भाव जागता है। उनमें बचत की प्रवृति आती है। आत्मनिर्भर होने की कोशिश करती हैं। और परिवार की आमदनी में योगदान करती है। इसलिये हमने इस पूरे विषय में दिलचस्पी ली और अंततोगत्वा जीविका नाम से एक नये सिरे से स्वयं सहायता समूहों का गठन प्रारंभ हुआ। और जो भी पुराने समूह गठित थे, उन सबों को जीविका के समूहों के स्तर का ही बनाते हुये इसमें शामिल किया गया और एक ही दायरे के अंर्तगत सारे स्वयं सहायता समूह को लाया गया। जगह जगह काम अच्छा है। हमने तो देखा कि जन वितरण प्रणाली की दुकान भी अच्छी तरह से चला रही है। पूर्णिया में जाकर हमने देखा और उनके स्वयं सहायता समूह के द्वारा संचालित जन वितरण प्रणाली की दुकान देखने का हमको मौका मिला। मैंने लोगों से पूछा। लोगों ने बड़ी खुशी जाहिर की। कहा कि बिल्कूल समय पर राशन मिल जाता है। तौल में भी बिल्कूल ठीक मिलता है। कम तौलने की शिकायत नहीं है। पैसा भी जो निर्धारित दर है उसी पर मिलता है। मुझे बड़ी खुशी हुई। फिर हमने समूह की दीदीयों से पूछा। जो जन वितरण प्रणाली की दुकान चला रही है। हमने कहा कि इस काम में कुछ फायदा होता है। मैंने ये प्रश्न क्यूं पूछा था। क्योंकि बिहार में जो डिलर हैं जो जनवितरण प्रणाली की दुकान चलाते हैं। वे जगह जगह अभियान चलाते थे कि हमको सरकारी नौकरी के रूप में मान्यता दी जाये। और कहते थे कि हमको कोई फायदा नहीं होता है। एक पैसा का फायदा नहीं है। इस तरह की बात कान में आती थी। तो हमने पूछा कि इसमें कुछ लाभ होता है। तो दीदीयों ने कहा कि चार हजार से पॉच हजार का फायदा हर माह समूह को हो रहा है। अब बताइये न कम तौल की शिकायत, समय पर अनाज देना। किसी को कोई शिकायत नहीं। दूसरी जगह पर चले जाइये तो बड़ी शिकायत मिलती है। एक बार हम चंपारण में थे। सेवा यात्रा के दौरान। ये 2011 के नवंबर की बात है। 11–12 के नवंबर के

आसपास हम उस इलाके में घूम रहे थे। एक जगह गॉव में जाकर बैठ गये। कुछ लोगों से पूछना शुरू किया। राशन की दुकान का हाल पूछना शुरू किया। तो उसमें लोगों ने तरह तरह की बात बताई। फिर हमने डिलर को बुलाया। और जब पूछना शुरू किया तो गॉव के लोगों ने कहा कि न न ठीके काम कर रहा है। थोड़ा बहुत मुनाफा कम होता है। इसलिये हम लोग भी मान लेते हैं। थोड़ा पैसा ज्यादा दे देते हैं। लेकिन देखिये लोगों को शिकायत नहीं थी। लेकिन हमने जो जन वितरण प्रणाली की दुकान पूर्णिया जिले में स्वयं सहायता समूह के द्वारा संचालित थी उसको देखा। न उपभोक्ता को शिकायत, न गॉव के आदमी को शिकायत। और समूह की दीदी भी कह रही है कि चार से पॉच हजार रूपया बच रहा है। तो उस दिन तो मेरे मन में स्वयं सहायता समूह की उपयोगिता और ज्यादा प्रमाणित हो गई। इसलिये हमलोग इस बात पर पूरे तौर पर संकल्पित हैं कि दस लाख समूहों का गठन हो। और जब समूहों के माध्यम से महिलायें काम करती है। जो पढ़ना लिखना भी नहीं जानती थी। वो आपस में अब एक एक चीज की बात करती हैं। गया का मेरा अनुभव है। जब हमने बात करना शुरू किया। तो बैंक के कारोबार से संबंधित सारे विषयों को इतनी सहजता के साथ उन्होंने रखा। और उसकी चर्चा की। मैं तो घोर आश्चर्य में पड़ गया कि भाई अच्छा खासा पढ़े–लिखे लोग भी बैंक के कारोबार के बारे में इतनी सहजता के साथ नहीं बता सकते। जितनी सहजता के साथ हमारे समूह की दीदीयॉ उसकी चर्चा कर रही हैं। मैं यहॉ भी बड़ा प्रभावित हुआ। मैं जहॉ जाता हूँ वहॉ समूह की खासियत को देखता हूँ। और हमने देखा कि समूह के साथ जुड़ी हुई दीदीयॉ जगह–जगह शराबबंदी के लिये भी अभियान चलाती हैं। मुजफ्फरपुर में बड़ा जोरदार अभियान चला था। शराबबंदी का निर्णय उस समय नहीं हुआ था, लेकिन मैंने उनके अभियान का समर्थन किया। और आपको मालूम होना चाहिये कि भले ही शराबबंदी नहीं हुई हो। लेकिन हमने 2011 से 26 नवंबर के दिन मद्य निषेध दिवस आयोजित करना प्रारंभ किया। जो गॉव पूरे तौर पर शराब से मुक्त हो जाता था, उसको हमलोग पुरस्कार देते थे। जो बच्चे अच्छा चित्र बनाते थे नशाखोरी के खिलाफ उनको पुरस्कृत करते थे। लोगों को संदेश भेजते थे। प्रभातफेरी निकलती थी। कई तरह के मद्य निषेध के कार्यक्रम को चलाया जाता। लेकिन हमने देखा कि ये सब करने के बाद भी जो शराब की लत है, वह घटने की बजाय बढ़ती चली जा रही है। लोग परेशान हो रहे हैं। जगह जगह से इस प्रकार की बात सुनने को मिलती थी। और मेरे दिल के अंदर की बात मैं बताता हूँ कि मेरे मन में द्वंद था। मुझको लगता था कि शराबबंदी लागू करें। मन में ये भी विचार था। लेकिन द्वंद इस बात को लेकर पैदा होता था कि शराबबंदी लागू कर दें। और ठीक ढंग से ये क्रियान्वित न हो पाये। चोरी छिपे

दो नंबर का कारोबार बढ़ने लगे। तो सरकार को राजस्व की भी क्षति और नशाखोरी भी बंद नहीं होगी। तो इस बात को लेकर मेरे मन में द्वंद रहता था। लेकिन ये बात हमें लगती थी कि हमें शराब को बंद करना है। पिछले साल नौ जुलाई को पटना में श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में ग्राम वार्ता नाम से एक कार्यक्रम आयोजित था। जिसमें स्वयं सहायता समूह की दीदीयॉ शामिल थी। महिला विकास निगम के द्वारा वह आयोजित था कार्यक्रम। उस कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण के बारे में, महिलाओं की समाज की भूमिका के बारे में, स्वयं सहायता समूह के बारे में, इसकी उपयोगिता के बारे में। सब चीजों पर मैंने चर्चा की। और चर्चा करके जैसे यहॉ बोल रहे हैं। बोलने के बाद हम अपनी जगह पर बैठे। और जैसे ही हम बैठे। वैसे ही पीछे से महिलाओं की कुछ आवाज आई। मुझे ऐसा लगा। कह रही हैं शराबबंदी लागू किजिये। तो संयोग से आज भी मेरे बगल में ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री बैठे हुये हैं श्रवण कुमार जी। उस रोज भी मेरे बगल में बैठे हुये थे। और मंत्रीगण थे। तो मैंने पूछा क्या कह रही हैं महिलायें। तो इन लोगों ने कहा कि शराबबंदी की मांग कर रही हैं। तो मैं अपनी कुर्सी से पुनः उठा माइक पर वापस आया। मेरे मन का जो द्वंद था वह मिट गया। और आकर मैंने यही एलान किया कि अगली बार आयेंगे तो शराबबंदी लागू करेंगे। बिहार के लोगों ने फिर काम करने का मौका दे दिया। तो शपथ ग्रहण हुआ मेरा 20 नवंबर को और पहला सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ 26 नवंबर को मद्य निषेध दिवस के अवसर पर, 2015 में। और उसी दिन हमने एलान कर दिया कि एक अप्रैल 2016 से हम शराबबंदी लागू करेंगे। और उसके लिये नई उत्पाद नीति बनायेंगे। ये सब बन गया। मुझको लगा कि ये बात ठीक है। अलग अलग जगहों पर महिलायें और खासकर स्वयं सहायता समूह की दीदीयॉ संघर्ष करती रही शराबबंदी के लिये। लेकिन मुझको लगा कि इसके लिये सशक्त अभियान भी चलाना चाहिये। शिक्षा विभाग को ये जिम्मा दिया गया कि समन्यवय करें। और सबलोगों का साथ लें। शिक्षिकाओं का, लड़के लड़कियों का, स्वयं सहायता समूह की दीदीयों का, विकास मित्रों का, टोला सेवकों का आदि आदि आंगनबाड़ी से जुड़े लोगों का, साक्षरता से जुड़े कर्मियों का सबका सहयोग लिया गया। और ये जबरदस्त अभियान चला। मैंने जनवरी महीने में उस अभियान की शुरूआत की। और यह लक्ष्य रखा गया कि हमारे स्कूली बच्चे अपने अपने घर में अपने अभिभावक से, पिता से या अभिभावक से शपथ पत्र भरवायेंगे कि मैं शराब नहीं पीयूंगा। और दूसरों को भी शराब नहीं पीने के लिये प्रेरित करूंगा। जो अभियान जबरदस्त चला नुक्कड़ नाटक, दीवारों पर लेखन ये सब काम चला। गॉव गॉव में जुलूस निकाले गये। मीटिंगे हुई। और मुझे बेहद प्रसन्नता हुई कि इस अभियान के चलते पूरे बिहार में 31 मार्च 2016 तक

1 करोड़ 19 लाख अभिभावकों ने शपथ–पत्र भरकर दिया कि शराब नहीं पीयेंगे और दूसरों को नहीं पीने के लिये प्रेरित करेंगे। ये मामूली बात नहीं हैं। इस देश में इतनी बड़ी संख्या में शपथ पत्र किसी राज्य में नहीं भरा गया हैं। अपने ही राज्य में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना चाहिये। इसके लिये हमलोगों ने अभियान चलाया था। उसमें हस्ताक्षर हुये थे 1 करोड़ 17 लाख लोगों के। उसका भी रिकॉर्ड तोड़ दिया और एक करोड़ उन्नीस लाख लोगों ने शपथ पत्र भरा कि हम शराब नहीं पीयेंगे। ये कोई मामूली उपलब्धि नहीं हैं। नौ लाख जगहों पर दिवारों पर नारे लिखे गये लोगों के द्वारा। साढ़े आठ हजार से भी ज्यादा नुक्कड़ नाटकों का मंचन हुआ, गीत संगीत और अभी जो गीत सुन रहे थे। ये सब इसी दौर में प्रतियोगिता हुई और लोगों ने एक से एक गीत बनाया अपने इलाके में। उस गीत को गाया भी। और हम अलग अलग कमिश्नरी में जा रहे हैं। आज ये सातवां कमिश्नरी है नौ कमिश्नरी में। इसके पहले छह कमिश्नरी में प्रमंडल स्तरीय इस तरह का कार्यक्रम हो चुका। आज हम यहॉ है मगध प्रमंडल में। 13 तारीख को पूर्णिया में जा रहे हैं। हम पूर्णिया में गये थे। लेकिन महिलाओं का यह सम्मेलन नहीं हुआ था इस प्रकार का और चौदह को पटना प्रमंडल का है। तो जगह जगह जाकर हम लोगों को धन्यवाद देते हैं। और देखिये पिछले साल नौ जूलाई को मांग की थी स्वयं सहायता समूह की दीदीयों ने। हमने एलान किया और सिर्फ एलान नहीं किया। एक अप्रैल से लागू भी कर दिया। पहले हमने सोचा चरणबद्ध लागू होना है। एक तारीख से गॉव में देशी विदेशी सब बंद। शहरों में खास करके जहॉ नगर निगम और नगर पालिका है। उन शहरों में विदेशी शराब की इजाजत एक अप्रैल से थी। लेकिन हमने देखा कि शराब की दुकान अगर खुल रही है शहरों में। किसी भी शहर के बारे में खबर मिल रही थी कि भाई महिलायें इक्कठा हो रही है और लोग इक्कठा हो रहे हैं। शराब की दुकान खुलने का विरोध कर रहे हैं। हमने कहा इससे बेहतर माहौल अब क्या होगा। हमलोग वातावरण बनाना चाहते थे। वह वातावरण अब तो गॉव क्या शहरों में भी बन गया। इसलिये हमने कहा कि तुरंत विदेशी शराब भी बंद होना चाहिये। पॉच अप्रैल से चार दिन के बाद विदेशी शराब भी बंद। यानि पूरे बिहार में पूर्ण शराबबंदी। अब देखिये इसका कितना समर्थन है। महिलाओं का समर्थन बच्चों का समर्थन, पुरूषों का समर्थन और जो शुरू में नाराज थे शराबबंदी के कारण हमसे। मेरे उपर तरह तरह का बात बोलते थे जिनको पीने की आदत थी। दो महीने के अंदर वो भी अब खुश हो गये। वे भी कहने लगे कि बड़ा अच्छा काम हुआ शराब बंद हो गया। यह बहुत बुरी चीज थी। हमारे आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुधर गया। यहॉ स्वयं सहायता समूह की चार दीदीयों ने अपना अनुभव सुनाये। क्या क्या झेलना पड़ा था।

और आज अब किसी बहन को उस दुख को झेलना नहीं पड़ेगा उस प्रकार का। तो अब लागू हो गया अब आप लोग की जिम्मेवारी है। सिर्फ खुशी का इजहार मत करिये। और खाली हमको बधाई मत दे दीजिये। हम आये हैं और ये जो जगह जगह हम इस प्रकार के सम्मेलन में हिस्सा ले रहे हैं। उसका एकमात्र लक्ष्य है यह है सतत निगरानी, सतर्कता। ध्यान रखिये लागू हो गया है पूरे तौर पर लागू है। और आपको पुलिस महानिदेशक ने बताया कि जिस थाना में गड़बड़ पाया जायेगा। तो दारोगा जी पर तो कार्रवाई होगी ही। उसके साथ साथ तत्काल प्रभाव से थाना के काम से उनको मुक्त कर दिया जायेगा दस साल तक। आप कल्पना करिये। हमलोग छोड़ नहीं रहे है। ये लोग गड़बड़ करेंगे। किसी को नाजायज फसायेंगे। तो इन पर भी कार्रवाई होगी। याद है न यहीं जी टी रोड है। शेरशाह सूरी पथ। मोहनिया के पास एक बाहर के आदमी को एक्साइज के कर्मचारियों ने तंग किया। कहा पैसा दो। नहीं तो तुम्हारी गाड़ी में बोतल रख देंगे शराब का। तुमको बंद कर देंगे। ये बात शाम में प्रकाश में आई की एक जगह इस तरह से तंग किया। आपको मालूम है। उसपर मुकदमा हुआ। और सिर्फ मुकदमा दर्ज नहीं हुआ। सात लोग थे उस समय पर तैनात। सातों लोगों को दो दिन के अंदर नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया, सरकारी नौकरी से। आपराधिक मामला तो चलेगा ही, जेल जायेंगे, सजा भुगतेंगे। कानून में जो प्रावधान है। वो तो होगा ही। लेकिन नौकरी से भी गये। तो इस प्रकार से हमलोग एक एक चीज पर निगरानी रख रहे हैं कि कोई लोगों को नाजायज तंग न करें। लेकिन साथ साथ कोई प्रभाव का इस्तेमाल करके, बायें दायें करके अगर पीने और पिलाने की कोशिश करेगा, तो कानून में जो सख्त प्रावधान किये गये हैं। उसके अनुरूप उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी। तो ये सब काम किया जा रहा है। और आप सब देख रहे हैं। कितने लोग कहॉ कहॉ पकड़ा रहे हैं। और अगर कानून में, पुराने कानून में हमलोगों ने कुछ संसोधन किया। लेकिन कहीं त्रुटिवश एकाध जगह प्रावधान ऐसा बन गया हो। जिसका लाभ आरोपी लोग उठा रहे होंगे। तो आ रहा है अगला हमारा मॉनसून सत्र। वर्षाकालीन सत्र विधानमंडल का। एक एक बिन्दू की और समीक्षा कर रहे हैं हमलोग। जहॉ जहॉ त्रृटि होगी। उस त्रृटि का भी परिमार्जन कर दिया जायेगा। एक छेद नहीं छोड़ेंगे। तो हमलोग तो इतनी कठोर कार्रवाई कर रहे हैं। आप लोग से क्या। और आप लोग देख रहे हैं। आपको बताया। डीजीपी ने बताया। अपराध घट गये। कुल संगेय अपराध में पन्द्रह परसेंट की गिरावट आ गई। हत्या के मामले में ये पूरे बिहार का, इन्होंने आपको मगध प्रमंडल का बताया। पूरे बिहार में दो महीने के अंदर हत्या में 32 प्रतिशत की कमी हो गई। डकैती में 45 प्रतिशत की कमी हो गई। फिरौती हेतु अपहरण में 78 प्रतिशत की कमी हो गई। सड़क

दुर्घटना में 32 प्रतिशत की कमी हो गई। आज हम देख रहे थे केन्द्रीय मंत्री का बयान पढ़ रहे थे अखबार में। कितनी सड़क दुर्घटना होती है क्या होती है। हम तो उनको कहेंगे। इसके लिये ट्रेनिंग और गाइडलाइन जारी करिये। गडकरी जी, पूरे देश में शराबबंदी लागू करा दीजिये। 32 परसेंट 40 परसेंट दुर्घटना तो अपने आप से घट जायेगी। इसका उपाय करिये और जो काम करना है, वो भी करिये। लेकिन यह भी करिये। आज भी मैंने देखा। हमने कहा बिहार का नतीजा आपके सामने हैं। कितनी दुर्घटना होती थी। सड़क की स्थिति अब सुधरते जा रही है। वाहनों का चलना ज्यादा हो गया। आवागमन ज्यादा हो गया। जब से शराबबंदी लागू हुई है। दुर्घटना भी कम। तो इस तरह से अनेक लाभ हुये। और एक अध्ययन किया गया है। मेरे हिसाब से वे पुलिस पदाधिकारी ही हैं। उन्होंने अध्ययन किया और रिपोर्ट आई हैं। इस देश के बारे में उनका अध्ययन है। अकेले बिहार के बारे में नहीं हैं। जितने लोग जेल में बंद हैं सजायाफ्ता। उनके बीच अध्ययन किया और ये पाया कि जेल में बंद जो सजायाफ्ता हैं। उसमें से 41 प्रतिशत लोगों ने शराब के नशे में अपराध किया। जिसके चलते आज उनको सजा भुगतनी पड़ रही है। कल्पना करिये। शराब के बंद होने से अपराध की संख्या में भी कमी आ रही है। और कितने लोग जिनको जेलों में समय बिताना पड़ता है। सजा काटनी पड़ती है। वैसे लोगों के लिये इसके जीवन में नौबत भी नहीं आयेगी। कितना बड़ा परिवर्तन होगा। आज गॉव गॉव में शांति है। दीदीयॉ कह रही थी। अब माहौल सुधर गया। हल्ला, हंगामा, शाम होते मारपीट, गाली–गलौज का जो वातावरण था। सड़क किनारे जो वातावरण था। आज वो माहौल बदल गया। अब शांति है। कोलाहल नहीं है, मारपीट नहीं है, प्रेम का माहौल है। ये सब जगह दिखाई पड़ रहा है। लोगों का व्यवहार बदल रहा है। आचरण बदल रहा है। घर में जो पति लोग दारू पीके आते थे और लोगों को तंग करते थे। परेशान करते थे। अब वे बाहर से आते हैं तो बाजार से सब्जी खरीद करके आते हैं। ये परिवर्तन आया है। ये कोई मामूली परिवर्तन नहीं है। इसी को कहते हैं सामाजिक परिवर्तन। तो आज आपके बीच में आये हैं इसलिये आपको बधाई भी है। जो भी अभियान चलाया। लेकिन साथ साथ आपको आगाह भी करने आये हैं। यह ऐसी चीज है जिसपर निरंतर सतर्कता की जरूरत है। सड़क पर जगह जगह बोर्ड लगा रहता है। सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। तो उसी तरह से शराबबंदी का मुहिम है। आपलोग शराब की दुकान को देखकर पहले जैसे आंदोलित होते थे। आज भले खुलेआम शराब की दुकान आपको खुली नहीं मिलेगी। लेकिन जो लोग पीते पिलाते थे। वैसे लोगों पर जरा नजर रखियेगा कि आजकल कर क्या रहे हैं। जो शाम में घर में तरकारी लेकर आयेगा। इसका मतलब है वह सुधर गया। लेकिन जो

ऐसा नहीं कर रहा है तो कर क्या रहा है। उसपर नजर रखियेगा। अब आज आपलोगों की जिम्मेवारी और बढ़ी हुई है। सिर्फ निश्चिंत होने की जरूरत नहीं है। और हमलोगों ने एक एक इंतजाम कर रखा है। उत्पाद विभाग में और पुलिस विभाग में। फोन नंबर जारी कर दिया गया है कि कहीं कोई गड़बड़ी दिखे तो तुरंत फोन किजिये। तत्क्षण कार्रवाई होगी। हर चीज का अनुश्रवण देखा जा रहा है। रोज शाम में मेरे पास भी रिपोर्ट आती है। लोग कहते थे लागू हो ही नहीं सकता है सफलतापूर्वक। जब मेरे मन से द्वंद मिटा 9 जुलाई 2015 को मैंने एलान किया। और जब हमने लागू कर दिया। तो हम इसको पूरे तौर पर आज ये कामयाब है। हम चाहेंगे सदा सर्वदा के लिये यह मुहिम कामयाब हो। लोगों की आदत भी बदल जाये। तो हर दृष्टिकोण से हमलोग सजग रहते हैं। आज इसका असर दूसरे राज्यों में पड़ गया। झारखंड में जगह जगह आंदोलन हो रहे हैं। धनबाद की महिलाओं ने बुलाया। रॉची का चिट्ठी आया हमको। वहॉ महिलाओं ने जत्था बना लिया गुलाबी गैंग। डाल्टेनगंज से बुलाया हम जा रहे हैं फिर डाल्टेनगंज। इ लोग तो सोच रहे थे कि बोर्डर पर दारू बेच के हम और पैसा कमायेंगे। अरे वहॉ की महिलायें और वहॉ के लोग इस कदर अब जग चुके हैं कि बिहार में लागू है। झारखंड में कितना दिन बच के जायेंगे वहॉ भी शराबबंदी लागू करना पड़ेगा। इसी तरह से यूपी का हाल है। हम फिर जा रहे हैं यूपी। गये थे यूपी दो जगह। भारी अभियान शुरू हो गया। और आपको हम क्या बताये। यहॉ पर बैठे हुये हैं नोयडा से आये हुये हैं आचार्य पवन कुमार जी। ये शराबबंदी के खिलाफ नोयडा के इलाके में दिल्ली के बगल में जो यूपी का इलाका है अभियान चलाते हैं, आंदोलन करते हैं। ये हमसे संपर्क करने कल आये। और अपना समूचा कार्यक्रम दिखाया। मैंने इनको बधाई दी। और इन्होंने मुझको बुलाया कि आप आइये हमारे यहॉ। हम जबरदस्त अभियान चला रहे हैं। महिलाओं की भी बहुत भागीदारी होगी। हिन्दू भी होंगे, मुस्लिम भी होंगे, सिख भी होंगे, इसाई भी होंगे। हमने कहा हम जरूर आयेंगे। हमने कहा देखिये हमारे यहॉ शराबबंदी लागू करने के बाद हमलोग चैन से नहीं बैठे हैं। समूह के दीदीयों के कहने पर हमने लागू किया। घूम–घूम के उनको आह्वान कर रहे हैं कि सचेत रहिये। और हमने कहा लौट कर जाइयेगा तो गया होते हुये जाइये। गया में कल जीविका का सम्मेलन है। वहॉ जाकर देख लीजिये महिलाओं के जोश को। वो इसी के लिये आज आप के बीच में आये हैं। लेकिन आप कल्पना करिये। महाराष्ट्र से महिलायें आ रही है। राजस्थान से संपर्क कर रही हैं। मतलब क्या है अब देश भर में ये बात फैल गई। लोग पहले से अभियान चला रहे थे। और अब चुंकि बिहार ने लागू किया। लोगों का उत्साह और हौसला बढ़ गया। इस लिये आप लोग पर भी बड़ी जिम्मेवारी है। पूरा डटे रहियेगा ठीक ढंग से। पूरे तौर

पर ये सफल रूप से ये क्रियान्वित हो। सरकार, प्रशासन, पुलिस सब तो लगेंगे ही। लोग भी लगे हुये हैं। आप भी पूरे तौर पर इसमें दिलचस्पी लेकर लगे रहियेगा। तो ये पक्का मानिये। ये बिहार नजीर बनेगा। मैं तो सबको कह रहा हूँ। यहॉ पटना में एक समागम था। धार्मिक समागम था। ब्रम्हर्षि कुमार स्वामी जी का। उनसे हमारी बातचीत हुई। हमको बुलाया अपने कार्यक्रम में, वहॉ गये। उन्होंने और बाकी उनके कार्यक्रम में आये हुये कष्ट निवारण प्रभू कृपा कष्ट निवारण समागम था। गांधी मैदान में भारी संख्या में उस समागम में लोग जुटे थे। उनका मंत्र विज्ञान में विश्वास है। उन्होंने जो शराबबंदी के हक में अपनी बात रखी। बाकी साधु संतों से भी कहवाया। और मालूम है। उन्होंने कहा कि देश भर में हमलोग भी अभियान चलवायेंगे। हमसे जो जुड़े हुये लोग हैं। वे पूरे तौर पर अभियान चलायेंगे। महिलायें बैठेगी देशभर में। जहॉ भट्ठी चलती है जहॉ दुकान चलती है। कौन रोक पायेंगा अब इसको। कौन रोक पायेगा। तो गया कि धरती मगध की धरती पर। ऐतिहासिक भूमि है। मोक्ष की भी भूमि है, ज्ञान की भी भूमि है। यहीं लोगों को मोक्ष मिलता है और यही भगवान बुद्व को ज्ञान को प्राप्ति हुई थी। इस महान धरती का हम नमन करते हैं। और आप सब का यही आवाहन करते हैं कि एक क्षण के लिये इसमें सुस्ती नहीं होनी चाहिये। सब लोग सजग रहिये। और ये साल जो है। ये बापू के, राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के चंपारण सत्याग्रह का जो 1917 में हुआ था। उसका सौंवा साल है। और इस सौंवें साल के अवसर पर बिहार ने उनके चरणों में श्रद्धांजलि दी है शराबबंदी को लागू करके। जिसमें हर व्यक्ति का संकल्प है। हर हाल में इस अभियान को हम कारगर ढंग से कामयाब बनायेंगे और आगे भी इसको जारी रखेंगे। दूसरों राज्यों में भी इसका प्रभाव पैदा होगा। आप लोग देख रहे हैं। दो महीना से ज्यादा बीत गया। आज तो दस तारीख है न। आज दस जून है। सोच लीजिये। सत्तर दिन हो गया। और मजबूती के साथ ये अभियान लागू है। कोई डिगा नहीं सकता है। इसलिये आप संकल्प लीजिये। तब सब चीज पर नजर रखियेगा न। हाथ उठाके बताइये आप ही लोग से पूछ रहे हैं। अपने अपने गॉव में, समूह के क्षेत्र में, ग्राम संगठन के क्षेत्र में हर क्षण। एक बार फिर हाथ उठा दीजिये। बहुत बहुत धन्यवाद आपलोग बहुत सजग रहियेगा कि ये पीने पिलानेवाला पर पूरा नजर रखियेगा। तब लोगों को लगेगा कि कहीं इधर उधर करने की कोशिश करेंगे तो धरा जायेंगे। आजकल बोर्डर के पार जाता है पीने के लिये। यूपी में यूपी की महिलायें, बिहार के दारू पीने लोग गये थे बोर्डर पर खदेड़ के भगा दिया। नया दुकान खुला था। उसको बंद करा दिया। अब महिलायें इतनी संजग है। कौन इसको रोक सकता है। और महिलाओं के साथ युवा और अब तो पुरूष भी। अब तो पीने वाले भी साथ हैं। अब कुछ लोग हैं। कुछ लोग

होंगे शंका के दृष्टिकोण से, ज्यादा नहीं। जो इसके खिलाफ हैं। धीरे धीरे वो भी ठीक हो जायेंगे। हमको मालूम है। जो व्यापक जनमत का प्रभाव और समाज पर जो इसका सख्त प्रभाव पड़ रहा है। उसको देखते हुये सब लोग इसको मानेंगे। तो आज के इस अवसर पर मैं इन्हीं शब्दों के साथ आप सबको अपनी शुभकामनायें देता हूॅ। और जो हाथ उठाकर संकल्प लिया है। इसके हिसाब से हर समय आप अपनी सक्रियता दिखायेगा। और सजगता दिखायेगा। तो इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः ग्रामीण विकास विभाग को अरविन्द चौधरी जी को, ये शुरू से जीविका से जुड़े हैं। बालामुरूगन जी, गया में भी डीएम और जहानाबाद में डीएम रहे हैं। आप जानते हैं। सामाजिक विषयों में अभिरूचि है। इसलिये अब इसके परियोजना पदाधिकारी है। तो हम तो चाहते हैं जीविका को मजबूत करें। दस लाख समूह दो हजार सतरह तक इससे भी ज्यादा गठित हो जाये। डेढ़ करोड़ परिवार जुड़ जायेंगे। आप समझ लीजिये उनकी माली हालत में कितना सुधार आयेगा। एक नहीं अनेक कार्यक्रमों के जरिये आपकी माली हालत में सुधार करना चाहते हैं। ताकि आपका भी योगदान हो। बिहार प्रगति करें। और जो हमारी संकल्पना है न्याय के साथ विकास की। उसी के आधार पर बिहार आगे बढ़ेगा। इन्हीं शब्दों के साथ आप सब को बहुत बहुत धन्यवाद। आयोजकों को बधाई देते हुये मैं अपनी वाणी को विराम देता हूॅ।